

सुभा वज्रितको ॥ ऐसै रामच
न्द्र वैदेही जो सीता तितको
पद्मवती ऐसो जो मुखार वि
न्दताके ऊपर वरकुनाय
रहे ॥ श्रीसीताजी सहित
पौखलसके संहारकता ऐ
से जो रामचन्द्र तितको तम ॥
स्कारकर्तहं ॥ २ ॥ बंशेतामस
स्कारकर्तहं ॥ कैसे हे रामच
न्द्रके वरणागविंदकमलस
पीहे सुरदेवता तमेश्रेष्ठेता
कतपैक्षपाकरतहारशुभ्र
नर्तहा नृमानजनकरके से ॥

वातयकरकेवाच्छितफा।
तत्रासिहोयसोसुनवेकी।
हमारीइच्छाहेताकोंतुमकी
हो॥ ५॥ अथवसूतजीकाहित
नयेहूय्योएकसमेतारद।
जीतेनावानतेप्रसकरीत्रो।
रजेसेनावानतेतारदसेका।
हीसोसंपूर्णसावधानहेके
तुमसुनोहएकसमेतारद।
जीपरयेप्राज्ञकीइच्छाकी
रकेविबुधनानाप्रकारकेसो
कतितमेंफिरतेनयेमृत्यु।
लोकतामेंआवतिनये॥

तश्च वर्णान्तको वास्तिना
धारण किये शब्दकगक्षप
दलिये वनमालाप हिरनये १०
नगावातको ए सो रूप सो दे
खके ता रक्ष जीखु विकर्त न
ये हे नगावात तुमको हे मारी
नमस्कार हे कै से हे तुम वा
णीके मनके जात नहार हो
अनंद अनंत रूप हे अनंत श
क्ति हे तुम्हारी आदि मध्य अं
तताको कारण हो निर्गुण हो
गुणकी आत्मा ही सम्पूर्ण प्र
णीतके आदि भूतिकार

ध्रुवोऽसौ नृपायतुमकहोमि
एताथताकेसुनेवकीइच्छाहेसे
त्रापृथपाकाकेकहेपातवन
गवानवोतेहेसाधुतुमनेअच्छी
प्रभकरीसंसारकेलाएकेअर्थ
ताकेकियेतमोहतेछटजायत
कोकहेहेसोतुमसुने।दहेवार
हजाएकेकसहेताकोबडापुत्र
हेस्वामितुवाकामेदुतेनहेसातु
हारेजेहिकार्केअवकाशक
रहे।४।कोनसोहतेहेताकोप्र
काशकरहे।सतनाशयको
वृत्तहेताकेकियेतेशीअहीसुख

करेसर्वत्रविजयकोदयत्रैसोष्ट
तवाकाजाहिनतादिनकरैतक्ति
करेकेयुक्तश्रद्धसहितरणसा
त्यतायथाज्ञानवानकोपूजन
त्रिमंकरेतीराणादिकरेबन्दरवा
रवांधेकेखंनगाटेयाकक
तस्यस्थापितकरेवजासहितस
तसोत्रकेरत्नसहितसुपारीक
रकेसहितस्यपुलोकीमाला
कतसकोपहिरावैसततजाता
केनपरकतशकोंधरेसमीव
श्रसेवाकोटकेताताप्रकारके
वर्णतासोचर्वेस्थ ताकेपासग

माकोस्थापितकरेस्वस्तिव
क्तसहितकीशाणप्रतिध्व
रो॥२७॥ वंस्तकरिकेसुंघि
ककेलेपतकरेरितुफलसुं
दधूपदीपतेवेद्यतावृलक
हिकेसोटसोपवप्रपूजतकरे
२८॥ ब्राह्मणतककेसहित
धर्मीमेतत्परहोकेअपतेना
य्यबंधुतकोबुलाबिकेभक्ति
सहिततैद्यतोगलगावेसया
दसहित॥३०॥ स्ताफलकहि
येकेलाघृतदूधोह्काआटा
अथनावासकोआटेतामेस

की वजह निश्चय सिद्ध होगी।
३४। विशेषकर केवलियुगमें य
ह उपाय ब्रह्मोद्योग है सो तुम से क
हो है अस्यै एक है है जा करि
नेप हिते वदवृत्त कियोग्यो।
जाको इतिहास कहत है। ३५।
कृपाकारिके नामाने ब्राह्म
एको रूप धरिके प्रगटि ज्ये सो
सो इतिहास ब्राह्मणको नाम
नसम्बादताको कहत है। ३६।
काशीपूताके विषे एक ब्राह्म
ण होत जयो दोन कहो गरीबा
हस्ती नित्य निहाकरिके कुटो

नकी आसा क रिया क द्वा
को जा फिहे ॥ तत्र गवातवा
सा एतं कहत नयेक विया के
विषे विशेष कर्के गहम वसीत
हं ब्राह्मण को उचित है परतु मरे उप
देशं तस्य नारायण को नज ॥ ४२ ॥
को सहे मत्प नारायण तीन प्रकार के
दश द्वशोक सत्तापतिन को हे दे
मोक्ष को दे दे मत को छुटा देय है
एसे सत नारायण तिन की मरण
जाउ ॥ ४३ ॥ एसे न ब्राह्मण को समझ
को ना बनते कहूणा कस्कि त
ब्राह्मण फर्यु हत नयो ॥ सत्य

कृष्णतन्त्राणां ॥ ४६ ॥ पूजा की ४
मिमीसक्यायके जगह के क
ल्याण के अर्थ सत्तराण वि
पूजन के रीत मया को प्राटक
रो ॥ ४७ ॥ से कहते नयो ब्रा
ह्मण देश तयो नगवान के ह
यको के सो स्वह्य हे प्रघ की
सीत्राता मुन्दर ह्य पव्या रि कु
ति नमि संख कना गद्द पदालि
ये ॥ ४८ ॥ पीताम्बर को धारण
कियो एसे शोभाय माने न वन
साता पहिरि नके ॥ ४९ ॥ एसे
नगवान के वदन मुन के प्रस

लमूर्ति हो तुमको हमारी निम
स्कार है ॥ ५२ ॥ हम आज धर
दे हमारे जन आज कृत्य कृत्य
भयो वा ए कि जा न न हार तुम
प्रत्यक्ष भये ताते ॥ ५३ ॥ सो मह
राज कदा वृणत करे न जाते
को न फल से क्रिया ही तं मंश
सा गीता की हि सुक ल करी
५४ ॥ सो महाराज को न की पू
जा करे को न विधा न हे सो तुम
क हो कृपा करि के ॥ ५५ ॥ तवा
जग वा न कहत भये ॥ मीठी वा
ए सि मेरी पूजा करो मे बहुता

कप्रकारकेरितुफालवेदके
सद्वनसहितपूजाकरे ॥ ६० ॥
मिच्छातपातमेंवासहितश्रद्धा
सहितनक्तिमेंसपरहोकोपू
जातकरे ॥ ६१ ॥ परंतमेरीकथ
ताकोपामत्रादृश्येनेरा
जाकेवनिपाकेइतिहासता
कोसुने ॥ ६२ ॥ कथासुनके
वमस्कारकरेतवप्रसादले
माममानकेपमाननकरेको
मिलेताकोनोपलगावे ॥ ६३ ॥
द्वयहसोहमारीप्रीतिनहीहे
हमनेजन्तकेवसहे ॥ सोये

सोमस्यनामयणकीपूजा
करेगो॥६३॥ यहतिश्रयत्रप
नेमतमेकारकेत्रिचाकोत्र
थसमेजातनयोर्बेदनावि
नामामियाकोकडतद्रव्य।
मिलो॥६४॥ तवकौतुकदेश
खकेत्रपनेगृहकोश्राव।
तनयोथेदतांतव्रह्मणीसे।
कहततयोघ्राह्मणीप्रसन्न
होतमर्द॥६५॥ तवकर्ताकी
आज्ञापाइकेकाद्रव्यकीसा।
मिग्रीलावतमर्द॥ अथनेन
ईबंधुपरोसीतिनकोबुलाव

तव नगावानबोलितथास्त
मेतुमनेकोहीअसीहोयग
वहुनसीहोयगीअहकहवे
नावानअंतरध्यानहोतनये
सत्यतंदकृतकृत्यहोतनये
सज्जमस्यकर्तनये॥१४॥तव
सज्जमंरश्मिमिदित्तनयेके
नमस्कारकर्तनये॥अहस
हितप्रशास्तेतनयेताअंत
एवमनुष्यधत्त॥अकहते
॥अपनेअपनेहकोजात
नये॥१५॥तवयाकोप्रवास्ये
नये॥सत्यताया॥

नगवानकीपूजाकरेहेवि
प्रिपूर्वकतवयातेजनपीके
कडीअश्रायोमानोयानिह
ककेधतकहातेआयो॥३॥
तवनिघाहविचारतमयोज
षयाकीरेख्योतवकचुनध
अवधतयाकेकहातेआ
योयहविचारकेनमस्कार
करतनयो॥४॥ यहइव्यतु
हारेकहातेआयोदरिद्रि
कहागयोसोतुमकहोहमा
रीसुतवेकीइच्छारे॥५॥ तव
सतानंदकहमयोविपादिते

तियाश्के हतनयोने एष
स्त्रीत्वयता तं दवा मेदति
हासक हन लो एकरा जहे
केदारणी पुरप्रहतापें वडो।
धर्मात्मा हे वं इव वक्रो ना
महे प्रजाकोपालनामंतस्य
हे मां तहे स्वभावकाकोमी भव
णी वडी पराक्रमी तारायण।
कीसेवा मत्स्य हे ॥ १० ॥ सो वं
इव राजा मे हे आश्रम मे श्र
वत नयो सत्य तारायण व
नाके अर्थ सो वास विधान
कहे माको सुतो ॥ ११ ॥ मे

गहंकी आरासवा सेर आ
दिप्रमाणतामधुधधीसर्के
रामितावे ॥ १५ ॥ परिपुत्राक
सारयेवनविंश्चैः सुन्स्य
लधूपदीपताकारिकेयूजन
करे ॥ १६ ॥ परमंतक्तिमहित
अनेकप्रकारकीसमिमी
महितनगवानद्रव्यसनही
असन्तहैकेवलनक्तिनिप्रा
सन्तहै ॥ १७ ॥ आगवानपरिपू
णहैतक्तिकेवसहैकेसैजे
सेदुर्जोधनकामेवात्यागक
रिकेयूजाकीवृंइके ॥ १८ ॥

षाद्वसुधकककककरोप्रीती
सहितसत्यनारायणकोपू
जनकरो॥२२॥यालोकमेंसु
खभोगकरें॥मृत्युहोगीतवा
नमवानकेतिकटप्राप्तहो
गि॥यहसुनकेतिब्राह्मणकृत
पत्नयोपतांभंदकोतमस्का
रकरिकैवलतत्तयो॥२३॥
अपनेसाथीनारायणको
सत्यनारायणकोपूजाको।
महात्मकहततनयोसुनके।
सबप्रसन्नहोतनयेयहवि।
वाककर्तनये॥२४॥सत्यनार

षाद्वसकककएकरोप्रीती
सहितसत्यनागयणकोपू
जनकरो॥२२॥यालोकमेंसु
खलोगकरे॥मृत्युहोगीतब
नमवानकेतिकटप्राप्तहो
गे॥यहसुनकेतिषाकृत्यरु
त्पन्नयोसतांनंदकोतमस्का
रकरिकैवलतन्नयो॥२३॥
अपनेसाथीनगासआयकै
सत्यनागयणकोपूजाको।
महात्मकहतनयोसुनके।
सबप्रसन्नहोतनयेयहवि।
वाककर्तनये॥२४॥सत्यनार

गता हां विश्राम करिकेय
हको तु कदेय तत्रयो ॥ ६ ॥ नौ
कासे नत रके मछली लादे ।
खत त्रयो कणे सो नत रिकेय
रस्य नता को दिख के अर
रसहित यूकृत त्रयो ॥ ७ ॥ या स
तमे सता कहा करे हे को तके
पुनत करे हो तव सता के लो
मबोलत त्रये सत्यता रा एकी
पूजा त करे ॥ ८ ॥ त्रया वंधु
सहित राजा पुत्र क रिव मड
व्यामात्र वे प्रशा न्दी तीज
त करे ॥ ९ ॥ कथा प्राय एक

गोकहततयो ॥ १५ ॥ कहीका ।
हेहेताभावातमेरेसंतानत
हहितातेप्रहेश्वर्यधनमेह ।
धाहेसोत्तुहारेप्रशास्तेपुत्र
वाकत्यामोकोप्रतिहोय । ह
काचनजीखर्वेणताकीपता
कावतकेहेरुयानिष्ठितुह
तुहारीपूजाकरुगोसंपूर्णस
नाकेन्नागेकहतयोमेरेका
र्यसिद्धिहोयतवपूजाकरो ॥ १
२ ॥ सभाप्रत्युतस्तेतनयीतथा
सुऐसेहीहोगीतप्रनगवान
कोनमस्कारकरिकेसना

गोकहतमयो ॥ १५ ॥ कहीका ।
हेहेनाभावानमेरेसंतानन
रहितातेयरेश्वर्यधनमेह ।
धाहेसोतुहारेप्रशास्तेपुत्र
कत्यामोकोप्रतिशेय । ह
वनजीखर्वेणताकीपता
केहेक्यानिमित्त

के अर्थ फरे व त न यो ॥ १ ॥ न म
स के ती र एक सह ता मे वा स क
के लो वे व नो क र्त्त न यो व द
त का ल सह त न यो ॥ २ ॥ स त से
वा णी से किये जो सं क ल्य स स
ना ग य ए की पू जा ता को त ही
क री ता के वि श्वे प से इ त को ।
वि प ति हो त न यी ॥ ३ ॥ एक दि
ना रा जा के अ श्व मे वी र आ ये स
व स नु स्य न को सो व तु श्रे य के ।
व द त इ व बुरा य ले जा त न ये
४ ॥ मो ति न की मा ला अ ने क
प्र का र की चं ड मा की सी का ।

जाओ वोरनको दूके लोओ
ए जो तुमन लोओ गी तो तुम
को मरवाय डावूओ ऐसे दूत
नसे कद्योत वदूतरा जाके व
वन मुनके किंकर बलत मये
ए तव दूवलिके विचार कर्त
नये धन कही नही प्राप्ति हो
यणो न वोर मिलिं गे यह विवा
रके विज्ञाप कर्त नये ॥ ॥ ता
वदूतनको सिद्धरताते क
द्योरा जाह मारे सबानको म
रवाय डावूओ अब हमको मु
खक हां यह विचार करते रा

प्रेमकेवलकीवीर्यपान
मंगलमंतौकडारतनये ॥ ६ ॥
एसीव्यवस्थादोतकीजयी
तवविलापकतेनयेवारंनप
१७ ॥ हातातहातातएसेसाधु
कोजमाईधुनकर्तनयोहमा
गुप्तजीनार्याकहाहोगी
देखोविधाताकीगलदीगति
हे ॥ ए ॥ देखोविधाताकीति
यताहमारोगहृत्पकरदि
योअहकेंद्रुःखरूपसमुद्रत
मेंहृनयोअहकहतनयोय
मंकठकोदूरकीगो ॥ १८ ॥ म

दको प्राप्तर्द्धे २३ याके श्री न
तरो कहिना साधु की कसती
जन वल्लभिता सतांत के गृह में
नाके देखत तई सत्य नारायण
की पूजा हो रही है २४ जात ।
के ताथ तुम सौ प्रार्थना कर
हूँ हे सत्य नारायण तावान ।
मेरे पिता और स्वामी जाहि
घर में आवे २५ ज व तुम श्री
नाम के हरी हस पूजा करेय
ह प्रार्थना तुम ते करे है तब
तांत देखे विषे ही होगी तुम ।
अपने गृह की जा श्री २६

खेकोसहस्रमेंजाततर्क॥२७॥
वाद्रव्यकिसामिप्रीत्यायके
कलावतीमातासहितपूजा
कर्तव्य॥३०॥ लीलावतीकं
त्यासहितविधिवर्ककपूजा।
करीतापूजकेप्रतावतेसत्यत
गयणप्रशब्दहोततये॥३१॥ प्र
सन्नहोकेराजाकोखप्रदिव
वततये॥ राजान्नपतेपलंगाप
रतिदामपरोहोथोरीसीरान्नि
वाकोरही॥३२॥ वासुमेंब्राह्म
णकोरूपधरिक्केकहततये
मीठीरुतवाणीताकोजानोउ

नेकाहीयाकेबंधतकोकार
एकहो॥३६॥तिसखकेमत
कोसुनकेउतकोबुलावतन
थी॥बुलायकेपूछतनयो॥३
७॥कोनतुमहेकोततुम्हारी।
जतिहेकहातुमारोवासहेका
हेकेअर्थआयेहो॥यहदृशाके
सेतईसोकहो॥३८॥तवसुधु
कहतनयो॥रतपुरमेंवसेहे
वतियाजातेहेवणिजकेअर्थ
आयेहेवणिजआजिवकाह
सागिहे॥३९॥मणिमोतीकेव
नेकोवहारासहरमे॥आये।

दत्तनयो ॥ ४३ ॥ त्वमाडिकोषु
लायकहजामतवनवाड ॥
त्रच्छेसुगंधतेलसोणवटन
करवायेलातकरवाये ॥ ४४ ॥
श्रेष्ठनेजतइतकोकराये ॥
राजातगहनाकस्त्रसवारीइ
वसोसाधुकोदियो ॥ ४५ ॥
वराजानदियोतवसाधुअण
तहीकेबोलततये ॥ ४६ ॥ के
दमेंहेराजाहमनेबहुतदुःख
पाये ॥ सोराजाअबहमरेम
कोजायवहाराअज्ञाहोष
तौअहसुनकेराजाखजाना

सुनारणकीपूजाकरेभ
सुनारणकोपकर्तये।
॥ सुनारणकीयुगा
केविषेप्रत्यक्षफलकेदेतह
रतपखीकोरूपधरकेसा
धूसेकहततये॥२॥तेरीनौ।
कामेंधतहेसोकधूमको
देतवसाधूकहततये।नौ
कासेउतरिकेमेरीनौकामें
धननहीबेलपताहेतसे।
पस्हीहे॥३॥अपनेस्थानके
जाओविरोधमतिकरोवि
रोधमेंकहाफलहै॥इहक

यो ॥ ३ ॥ तव साध्वो च तनयो ॥
तुमको न हो यह प्रकृत नयो
देवता हो गंधर्व हो ईश्वर हो दे
वता तके देवता हो कोई तुह
र पराक्रमको हम नही जाने
सो तुम ज्ञाता करो मेरी को ॥
तत्र पराधे ॥ ८ ॥ तव तपस्वी
नो ले तपतो शत्रु आपही है
ज्ञापतो मित्र आपही है ॥ ९ ॥
नताको छोडो रक्षावाद करे
हे मेते ॥ ज्ञानतासे नही जा
नो धनके गरीसे ॥ १० ॥ फरित
पस्वी कहततयो कृपा करि

संशोभकरो ॥ १४ ॥ सत्यतारा ।
यएजगवानतितकोरूपता
पस्वीहेतवसाधूनमस्कार
कर्ततयोवास्वारपस्कम
कर्ततयो ॥ १५ ॥ प्रशतहोकेग
दगश्वाणीसेस्तुतिकर्ततयो
॥ १६ ॥ सत्यरूपहोसत्यकेमित
पीहोतुमसत्यहोतुहारेस
त्यकरकेसकसत्यहेतुमक
नसस्कारह तुहारीमायाक
केसवमोहितहेसोहमने ।
अपनोककृशुनतहीजानो
॥ १७ ॥ दुःखरूपीसमुद्रतामेंबू

धनहोय ॥ २ ॥ मेरी पूजा मेसस
दत्त किंसे मेरे निकट आओ
गे तुमने सुकृति करीता सो प्र
त्त नय ॥ २ ॥ प्रशान्त होके तु
मको वर दियो जो कामना तु
हारी सिद्धि होय यह कहके
नगवान् अंतर ध्यात हो नये
साधु अर्पते आश्रमको आत
नयो ॥ २३ ॥ अर्पते नगरके पा
स आये तब दूतको घरमें के
त नयो ॥ तब दूत घर न आक
लोनावतीसे कहत नयो ॥ २४ ॥
जावई सहित साधु आगे ता

नयोश्चोकेदमंरहेतवकु
तप्रकारकेदुःखप्राप्तनए॥
एषोदुःखकमीनहीनयोय
हकेदृष्टकीतरेणिरतनयो
विधनातुमतेकहाकरी॥३॥
स्वसाधूकहततयो॥तुमक
हागये॥तुमवितहमागेजी
वतकेसेहोयहमर॥३॥पुत्र
करकेहमहीनसोतुमतेवि
धनाहमकोत्रिसकरदिये
भवकेसेहमागेजीवतहोय
३॥याकेअंततरवीलावती
मंगलावारसहितपहुंचीतहा

मृगको सोरंगकमलसेनेत्र
कोमलशरीरमेतितकीमा
लागलेमेपरीस्तनकेऊपर
सोनादेरहाहै॥३७॥ हाताथ
प्रियहोधर्मज्ञहंकेसूणा।
केकरतहारतुमविश्रितेति
रासाकरदया॥३८॥ कहामें।
जागकहामेंकरुंकेसेसुख
हमकोमिलैकौतदुःखतेह
मकोबुडावे॥३९॥ वेदमों
सेसुतीहेपतिकीअर्घी
॥हेपतिकेवियोगतेहस्र
केसेजीवे॥४०॥ कल्पवती

जवतौकाउमंजरीतवजवा
ईसेलियटकेंसवमुद्राहर्षके
प्राप्तहोततयो॥४४॥तवसा
वमनुष्यप्लाश्वैर्यमानतनये
परिकेफेरिजियोतहांसाधू
हर्षयुक्तनक्तियुक्तहोके॥४५॥
शूजाकेसमिप्रीलावतनये
सचकोबुलावतातयोब्रह्म।
एकोबुलावतनयो॥४६॥प
हितेसंकल्पकरोजोद्रव्यकी
सामिप्रीवतावतनयोता।
ताप्रकारकेतोएवताये।
अतेकप्रकारकेवंदेवावता

कैसे होतुम मोक्षपराध
तद्व्यातिमते ॥ ५२ ॥ सुखे
असुरराक्षसमनुष्यनाग
तन्हारिही अंगतें प्रसहितु
क्केके परक पाकरी हो मै
पराश्रीहंमोअपराधक्षमा
रो ॥ ५२ ॥ ऐसे अस्तिकरि कै
प्रथीमंगिरतनयो ॥ प्रेममेम
नहोके आसुजारतनयो प्रसा
नहोके ॥ ५३ ॥ ब्रह्माण्तको
नोजनकराक्तनयोअपनी।
गतिमिन्ननईकुटम्बग
तप्रशादपावतन

बनकी विष्णुस्वाकर्णो वि
ष्णुको वदुत पारिहो गो ॥
सर्वदेवतानके देव ॥ श्री
सत्यनातारायणकी कृपा
से सर्व वस्तु सुगम रही श्री
वैगीया कृत्यके बराबरको
ईयलनही हिया प्राणीको
पासे ॥ श्री सत्यनातारायण प्रा
त्यक्ष फल देगे ॥ ५६ ॥ श्रीस्तु

